BA II Hons

Q. Explain Locke theory of knowledge

मनुष्य की बुद्धि में संवेदन,

भेद, प्रत्यक्ष, तारतम्य बोध संगठन

(2) वास्तविकता है

वार है

किस प्रकार की भावना

(3) इसे शिक्षाप्रद

इनके पहले कि तीनों

डालें कि हमें

प्रत्याहरण (सामान्य प्रत्यय) का होता
है। संवेदन के द्वारा ही पहले बाह्य
गुणों का बोध होता है। धारणा
शक्ति के द्वारा यह अनुभव कुछ
समय तक मन में ठहरता है। यदि
मन में धारणा शक्ति न रहे तो
मनुष्य को ज्ञान हो ही नहीं
सकता। उसी के प्रमाण द्वारा उस
अनुभव को आवश्यकता पड़ने पर कभी
भी काम में लाया जा सकता है।
लॉक का उद्देश्य था कि ज्ञान
के आदि या पूर्व रूप को
(orginal archetipe) तथा उसकी
असंदिग्धता और सीमा का अध्ययन
करें। साथ ही साथ इस बात का
भी निर्णय लें कि ज्ञान का
क्या आधार है और किस
किस मात्राओं में किन-किन
वस्तुओं या विषयों का ज्ञान हमें
प्राप्त होता है। फिर हमलोगों
ने देखा है कि ज्ञान लॉक के

20 अनुभव को ही मिलता है और
अनिश्चित एवं शंकास्पद होना चाहिए
लॉक ने वास्तविकता को लेकर इस
मैन रहना चाहिए। अतः लॉक
ज्ञान मीमांसा के मूलतः तीन
देखने को मिलते हैं —

(1) ज्ञान की अनिश्चितता और
संभाव्यता (Probablity) कैसे
स्थापित की जाती है?

(2) ज्ञान की वास्तविकता कैसे
निर्धारित की जाए?

(3) ज्ञान के किस प्रकार सीमित
रहने पर इसे निश्चयात्मक समझा
जाए?

परन्तु इससे पहले कि तीनों
प्रश्नों पर प्रकाश डालें कि हमें यह
जानना जरूरी है कि लॉक के
अनुसार ज्ञान का क्या स्वरूप
था? उन्होंने अपनी विख्यात
पुस्तक 'An essay concerning
Human understanding'

मैं ज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा है कि — "Knowledge consists in perception of the connection and agreement or disagreement or repugnancy of idea."
अर्थात् प्रत्ययों के बीच संगति या असंगति (Disagreement) या विरोधिता (Repugnancy) के संबंध में प्रत्यक्ष को ज्ञान कहते हैं। लॉक ने कहा है कि संवेदन संवेदना और स्वसंवेदना के माध्यम से मन निष्क्रिय रूप में सरल प्रत्ययों को ग्रहण करता है जिसे प्रत्यक्षीकरण (Perception) कहा जाता है। इसके बाद इन सरल प्रत्ययों को मन में धारण करना पड़ता है जिसे धारणा (Retention) कहते हैं। यदि उन प्रत्ययों को मन में धारण नहीं किया जाए तो विभिन्न प्रत्ययों का निर्माण किस आधार पर होगा। अतः धारण करने के बाद मन की तीसरी क्रिया पृथक्करण (Discernment) की चलती है।

मन की चौथी क्रिया तुलना (comparision) की जाती है। इसमें हम प्रत्ययों के बीच समानता एवं असमानता की तुलना करते हैं। इसके बाद मन सभी प्रत्ययों का समन्वित रूप देता है जिसे मिश्रण (synthesis) क्रिया कहते हैं और अंत में प्रत्ययों के इस मिश्रित रूप को नामकरण या नामात्मक क्रम कहा जाता है। यह नामकरण इसीलिए आवश्यक है कि हम उसे याद रख सकें तथा भाषा की सहायता से स्पष्ट कर सकें। एक उदाहरण के द्वारा हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि सेब है तो सर्वप्रथम इन्द्रियों से रंग स्वाद इत्यादि सरल प्रत्यय के रूप में ग्रहण करते हैं फिर उन्हें हम मन में धारण करते हैं फिर उन विभिन्न प्रत्ययों को एक दूसरे से अलग करते हैं। इसके बाद उन प्रत्ययों की समानता और असमानता की तुलना करते हैं उसके बाद सबों की एकीकरण या

प्रत्ययों की उस सम्मिश्रण को एक नाम देते हैं कि अमुक वस्तु सेब है। केवल और मैरी ने भी इस विषय में कहा है – "The mind is impassive in perception proper but becomes more and more active in the following steps comparision, the composition of complex idea, and abstraction are the three great acts of the mind."

इस प्रकार संप्रत्यय का प्रत्याहरण किया जाता है, जो जाति का बोध कराता है। यह प्रत्याहरण की शक्ति – केवल मानव का ही विशेष गुण है। संवेदन, प्रत्यक्ष और संप्रत्यय में मन निष्क्रिय रहता शुद्ध विचार। इन्हीं शक्तियों के कारण बनता है, जब आगे की क्रिया में मन धीरे-धीरे स्वतंत्र होता है और आगे

के व्यक्तित्व हो जाता है।

व्यापार वाली आदि का उल्लेख देश के प्रयत्न का प्रकार होता है। कहीं पर वाली इत्यादि का प्रयत्न करने के बाद का ज्ञान होता है।

निष्क्रिय और क्रियाशील शक्तियों का निर्माण एवं बाह्य की वस्तुओं के परिवर्तन और रूप और क्रियाओं के परिवर्तन का अनुभव बाहर से होता है। व्यक्तित्व के बाकि है दोनों शक्तियाँ एवं एक शक्ति है।

कुत्तों में केवल वस्तु विशेष का बोध ही पाया जाता है, सामान्य प्रत्यय नहीं। जातियों सिद्ध प्रत्यय हैं जो मन शरीर युक्त से बनता है जो व्यवहार करता है। इसी प्रकार मन वायु तथा निर्देश प्रत्यय से युक्त हो जाता है।

Locke ने ज्ञान के [illegible]
है। जिस हम ज्ञान के [illegible] [illegible]
मात्रा वास्तविकता और निश्चय
प्रदेश के प्रश्न पर विचार करेंगे।

ज्ञान की वास्तविकता की समस्या —

अनेक प्रत्यात्मक ज्ञान इतने अधिक अन्तर्दृष्ट हैं जहाँ हम दो प्रत्ययों के बीच संगति और असंगति को साक्षात रीति से देखते हैं उसे हम अंतःप्रज्ञा कहते हैं जिसे [illegible] बोला नहीं है। ऐसा मालूम होता है Locke भी डेकार्ट की भाँति गणित से प्रभावित थे। चूँकि इसमें अधिकतर और अंतर्दृष्टि ज्ञान प्राप्त किया जाता है इसीलिए Locke Defines — Kowledge as "nothing but the perception of the conection of ~~and~~ an agreement and disagreement of any of ideas."

"In mind alone it consist."

अतः प्रज्ञा के बाद निर्देशात्मक या बौद्धिक ज्ञान की बारी आती है। तुलना करने पर पाते हैं कि A > B, B > C, ∴ A > C

प्रदर्शनात्मक ज्ञान अंतर्दृष्टि द्वारा बनाये रखने के लिए प्रत्येक पग में रहना चाहिए।

लॉक की विशेषता है कि वे समझते थे कि गणित शास्त्र को छोड़कर अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र में प्रदर्शनात्मक ज्ञान संभव है। इन्द्रियों ज्ञान ये भी प्रत्ययों के बीच रखा है और प्रत्यय तो सार्वभौम हो सकता है। "So according to Locke knowledge can be always universal."

लॉक अनेक स्थानों पर अंतर्ज्ञान को पर वहाँ के आधार नहीं है।

ऐन्द्रिक युक्तियाँ इसीलिए अवलम्बित
रहती हैं कि वे मन स्थित
परिभाषाओं तथा आधारों पर
आधारित नहीं रहती हैं।

ज्ञान के स्वरूप और
अवधारणा की भाषाएँ — मानव
ज्ञान को अलग प्रत्ययों से है।
इसीलिए ज्ञान प्रत्ययों के बीच
संगति या असंगति या
विरोध के संबंध को प्रत्यक्ष
है। अतः ज्ञान संबंधनात्मक
है। वे प्रत्ययवादी नहीं
वस्तुवादी हैं। मनुष्य को किसी
विषय का ज्ञान अधिक स्पष्ट
होता है या कम स्पष्ट
या अस्पष्ट। सबसे स्पष्ट
ज्ञान होता है — सहज प्रत्यक्षानुभव
द्वारा। मनः सहज ~~प्रत्यक्षानुभव~~
द्वारा अपनी आत्मा का ज्ञान
प्राप्त करता है जितने स्वयंसिद्ध
विचार हैं। ये ~~[illegible]~~ तीन

है तो आस्तिक है, ईश्वर के विषय में कहा जा सकता है कि उसका अस्तित्व है पर उसकी विशालता का ज्ञान मानव बुद्धि को नहीं हो सकता।

Locke ने ईश्वर, आत्मा और जगत तीनों को सत्य माना है। मनुष्य की चेतना के बारे में कहा है कि ईश्वर ने इन गुणों को उस पदार्थ में एक विशेष रूप से लगा दिया है।

लॉक के दर्शन की विवेचना करने पर लाक पता चलता है इनके कुछ अन्य आध्यात्मिक विचारों को माना है तथापि इनका अधिक झुकाव भौतिकवाद की ओर ही है।